Skill Development Programme

For Answer Writing

Governance (Model Answer)

DATE : 24-May-2018 **TIME : 11:45 am**

मुख्य परीक्षा

प्रश्न- गैर सरकारी संगठनों से आप क्या समझते हैं? इन संगठनों का महत्व बताते हुए इनकी भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (250 शब्द)

What do you mean by Non-Government Organisations (NGOs)? Describe the importance of these organisations and critically examine their role. (250 Words)

MODEL ANSWER

मुख्य बिन्दु

- भूमिका में गैर सरकारी संगठन की संक्षिप्त परिभाषा दीजिए।
- अगले पैरा में इसके महत्व को स्पष्ट करें।
- फिर अगले पैरा में आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
- अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दें।

उत्तर- **भूमिका :** गैर सरकारी संगठनों के अंतर्गत ऐसे समूह व संस्थान आते हैं, जो पूर्ण रूपेण या अधिकांश रूप से गैर-सरकारी होते हैं। इनका उद्देश्य व्यवसायिक न होकर मुख्यत: मानव मात्र के कल्याण और सहकारी तौर पर काम करना होता है। यह निजी तौर पर फण्ड एकत्रित करते हैं। इनके अंतर्गत स्वतंत्र समितियाँ, सामुदायिक संस्थाएं, सामाजिक समूह, महिला समूह इत्यादि आते हैं।

महत्व-

1. यह समाज विकास प्रेरित संगठन होते हैं, जो समाज को सशक्त और समर्थ बनाने में सहयोग देते हैं।
2. यह संगठन आर्थिक व सामाजिक स्तर पर पिछड़े लोगों के समूहों को सशक्त व समर्थ बनाने का कार्य करते हैं।
3. यह संगठन अपनी सक्रिय एवं प्रभावशाली भूमिका के कारण राष्ट्रीय विकास में अहम भूमिका निभाते हैं।
4. इन संगठनों ने सामुदायिक स्तर पर अपनी पैठ एवं तकनीकी दक्षता के जरिए आवश्यकता की पहचान एवं कार्यक्रमों के क्रियांवयन से, सामाजिक एवं आर्थिक विकास के माध्यम से लोगों के जीवन स्तर मे सुधार लाने में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

'तरूण भारत संघ' एक गैर सरकारी संगठन है, जिसके जन्मदाता 'राजेन्द्र सिंह' हैं, उन्होंने राजस्थान के गाँवों में पानी के संकट से ग्रस्त ग्रामीणों को राहत पहुँचाने और पानी के प्रबंधन व्यवस्था का जिम्मा लिया और अपने कार्य को पूरा किया।

आलोचनात्मक परीक्षण-

1. वैचारिक आधार पर यह संगठन किसी न किसी दल के समीप होते हैं।
2. न्यूक्लियर पॉवर प्रोजेक्ट, यूरेनियम खनन जैसी औद्योगिक ईकाइयों के निर्माण में NGO स्थानीय लोगों को भड़का कर अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं।
3. 1483 किमी. लम्बी दिल्ली-मुम्बई कॉरिडोर का विरोध पर्यावरण के नाम पर किया जा रहा है। अत: विदेशों से सहायता प्राप्त NGO भारत के विकास में बाधक बन रहे हैं।

दूसरी ओर कई ऐसे संगठन और NGO भी हैं, जो सीमित संसाधनों के माध्यम से विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।

* * *